और.... एक शेर

आग थे इब्तिदा-ए-इश्क़ में हम
हो गए ख़ाक इंतिहा है ये

-मीर तक़ी मीर

लोकमत समाचार

तमसो मा ज्योतिर्गमय

अपने हौसले को ये मत बताओ कि तुम्हारी परेशानी कितनी बड़ी है, अपनी परेशानी को ये बताओ कि तुम्हारा हौसला कितना बड़ा है. ■ अज्ञात

संपादकीय

आतंकवादियों पर कोई रहम नहीं

आखिर इंसाफ हो गया और साथ ही साथ साफ संदेश भी दे दिया गया कि देश के साथ गद्दारी करने वालों के साथ कानून, सरकार तथा जनता की कोई सहानुभूति नहीं होती. मानवाधिकार और मृत्युदंड का विरोध करने वाले तथाकथित एक्टिविस्ट, चिंतक, राजनेता, बुद्धिजीवी 1993 के मुंबई बम ब्लास्ट के दोषी याकूब मेमन को फांसी दिए जाने पर दुखी हैं. उन्हें याकूब के मानवाधिकारों की चिंता थी, उसके अपराधों पर कोई पश्चाताप नहीं था. यह बड़े आश्चर्य की बात है कि इन लोगों ने बम विस्फोटों में जान गंवाने वाले 257 व्यक्तियों तथा हजारों घायलों के जीने के अधिकार के बारे में कुछ नहीं सोचा. 257 लोगों के परिजन न तो कोई मुआवजा चाहते थे और न ही चाहते थे कि किसी से बदला लिया जाए. वे तो हमेशा से यही चाहते रहे कि उनके परिजन की जान लेने वाले अपराधियों को सजा मिले ताकि कोई भी व्यक्ति देश की एकता और अखंडता, सांप्रदायिक-सामाजिक सद्भाव के ताने-बाने से खिलवाड़ करने का दुस्साहस न कर सके. याकूब की फांसी से मुंबई बम धमाकों के पीड़ितों को निश्चित रूप से कुछ हद तक राहत मिली होगी परंतु पूरा इंसाफ तब होगा जब दाऊद इब्राहिम और टाइगर मेमन जैसे राष्ट्रद्रोहियों को गिरफ्तार कर सजा दी जाएगी. याकूब का अपराध जघन्य था परंतु कोई यह नहीं कह सकता कि उसे अपने बचाव का पूरा मौका नहीं दिया गया. भारत में न्यायिक व्यवस्था की अक्सर यह कहकर आलोचना की जाती है कि वह त्वरित न्याय उपलब्ध नहीं करवाती तथा लोगों को पीढ़ी-दर-पीढ़ी अदालतों के चक्कर काटने पड़ते हैं लेकिन हमारी न्याय व्यवस्था की इस खूबी को नजरअंदाज कर दिया जाता है कि वह अभियुक्त को अपना पक्ष रखने का पूरा मौका देती है और यह सुनिश्चित करने का प्रयास करती है कि किसी निर्दोष को सजा न मिले. याकूब के साथ भी ऐसा ही हुआ. हमारी न्याय व्यवस्था ने भी यह सुनिश्चित किया कि याकूब की एक भी गुहार अनसुनी न रह जाए. भारत की न्यायपालिका के इतिहास में यह पहला मौका था जब देश की सर्वोच्च अदालत आधी रात के बाद न्याय करने के लिए बैठी. देश के बड़े-बड़े वकील याकूब की पैरवी के लिए जुटे थे लेकिन अदालत न्याय करते समय सिर्फ कानून के प्रावधानों को देखता है, सामने खड़े प्रभावशाली पैरवीकार को नहीं. प्रशांत भूषण और उनके साथ मौजूद कानूनी हस्तियों ने 257 लोगों की जान लेने की साजिश रचने वाले जघन्य अपराधी को बचाने के लिए एड़ी-चोटी का जोर लगा दिया. ये वकील एक-एक मुकदमे की पैरवी के लिए मोटी रकम लेते हैं. इसमें कोई हर्ज भी नहीं है क्योंकि यह उनका पेशा है लेकिन असली सवाल यह है कि मानवाधिकारों के इन पैरोकारों ने देश की हजारों जेलों में बंद उन लाखों गरीब अभियुक्तों की कभी कोई चिंता क्यों नहीं की जो सजा पूरी हो जाने के बाद भी किसी न किसी कारण से बाहर नहीं आ पा रहे हैं. याकूब के लिए इन कानूनी दिग्गजों ने जितना जोर लगाया, उसका दसवां हिस्सा भी अगर अदालतों के चक्कर काटने वाले गरीब तबके तथा जेलों में बंद सामान्य लोगों के लिए लगाएं तो उनकी वकालत ज्यादा सार्थक कहलाएगी. प्रशांत भूषण जैसे वकील अगर अपने ज्ञान तथा ऊर्जा का रचनात्मक उपयोग करें तो अपने पेशे के साथ बेहतर न्याय कर पाएंगे. बहरहाल अफजल गुरु और अजमल कसाब के बाद याकूब को फांसी आतंकवादियों को निश्चित रूप से कठोर संदेश देगी. ■■

युग परिवर्तन

'मां, आप क्या लिख रही हैं.'

'बेटे, मेरे मन में कुछ विचार हैं. जिन्हें मैं कलमबद्ध करना चाहती हूं.'

'तो कागज पर क्यों लिख रही हो.'

लघुकथा

ऋता शेखर 'मधु'

'फिर कहां लिखूं.'

'लैपटाप पर लिखो.'

'मुझे तो नहीं आता. हमारे जमाने में कम्प्यूटर नहीं था न, हमने तो कागज पर लिखकर ही पढ़ाई की है.'

'अब सीख लो.'

'मुझसे नहीं हो पाएगा.'

'ऐसा नहीं है. मैं आपको सिखाऊंगा.' - बेटे ने मां की उंगली पकड़कर बोर्ड पर दौड़ानी शुरू की. स्क्रीन पर अक्षर के मोती उभरने लगे.

मां की आंखें बरबस गीली हो गईं. उसे बसंत पंचमी का वह दिन याद आ गया जब उसने बेटे के हाथों में स्लेट पकड़ाई थी और उसकी उंगली पकड़कर प्रथम अक्षर लिखवाया था. ■■

यह मेरा आंगन, वहां तेरी सीमा

आलोक मेहता
वरिष्ठ पत्रकार

भारतीय सेना में उत्तरी और सेंट्रल कमांड के पूर्व प्रमुख लेफ्टिनेंट जनरल एच.एस. पांग ने गुरदासपुर के दीनानगर क्षेत्र में आतंकवादी हमले पर काबू पाने के लिए तत्काल सेना के हस्तक्षेप की अनुमति नहीं दिए जाने की तीखी आलोचना की है. जनरल का मानना है कि 'आतंकवादी हमलों के समय ऑपरेशन को किसी पुलिस बल, राज्य सरकार के अधिकार की इज्जत का मुद्दा नहीं बनाया जाना चाहिए.' इसमें कोई शक नहीं कि आतंकवादी गतिविधि संपूर्ण भारत की स्वतंत्रता, एकता और अखंडता पर आक्रमण है. आतंकवादियों के पास अत्याधुनिक हथियार और गोला-बारूद एवं महीनों की तैयारी होती है. किसी भी प्रदेश की सामान्य पुलिस और उसके थाने ऐसे बड़े हमलों से निपटने के लिए तैयार नहीं रहते. आपदा के समय 'यह मेरा आंगन', 'यह मेरा अधिकार', 'यह मेरी इज्जत' जैसी मानसिकता कहां तक उचित कही जा सकती है? दुनिया के किसी भी बड़े लोकतांत्रिक देश में ऐसे आतंकवादी हमले के समय स्थानीय पुलिस के साथ सेना के विशेष दस्ते ही नहीं, राष्ट्रीय सरकार की सारी एजेंसियां तत्काल मोर्चे पर पहुंच जाती हैं. पेरिस, लंदन, न्यूयार्क में हुई आतंकवादी घटनाओं के दौरान ऐसे संयुक्त ऑपरेशन हुए हैं.

गुरदासपुर की आतंकवादी घटना बड़े खतरे की घंटी है. केन्द्र सरकार की गुप्तचर एजेंसियां लगातार चेतावनी देती रही हैं कि पंजाब में मादक पदार्थों की तस्करी और अवैध हथियारों का धंधा चरम सीमा पर पहुंच गया है. पंजाब पुलिस का एक बड़ा हिस्सा पूरी तरह भ्रष्ट और अपराधियों के साथ सांठ-गांठ किए हुए है. भाजपा समर्थित अकाली सरकार के शीर्ष नेता भी अपराधी-पुलिस गठजोड़ का हिस्सा पाकर अरबपति हो गए हैं. असल में पंजाब की स्थिति इस समय अस्सी के दशक से अधिक खराब है, क्योंकि अपराधियों के पास उस जमाने के मुकाबले मोबाइल, नेट, तस्करी के हथकंडे और अत्याधुनिक हथियार एवं पाकिस्तानी आई. एस. आई. का अधिक समर्थन मिला हुआ है. पंजाब के ही भारतीय जनता पार्टी के कई नेता बंद कमरे में अकाली राज के भ्रष्ट तंत्र का दुखड़ा सुनाते हैं. लेकिन सत्ता में भागीदारी का नशा केंद्रीय नेताओं को झपकी दिलाता रहता है. पंजाब के पूर्व राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल बी.के.एन. छिब्बर ने भी गुरदासपुर की घटना में स्थानीय तस्कर गिरोह के सहयोग की आशंका जताई है.

पूर्वोत्तर राज्यों- अरुणाचल प्रदेश, असम, मणिपुर, नगालैंड, मिजोरम में क्या केंद्रीय सुरक्षा बल भारत विरोधी अलगाववादी तत्वों से निपटने के लिए निरंतर सक्रिय रहते हैं. सरकारी रिकार्ड से भी इस बात की पुष्टि होती है कि 1995 से 2015 के बीच पंजाब के 'शांतिकाल' में भी आतंकवाद से जुड़ी हिंसक घटनाओं में 120 लोग मारे जा चुके हैं. हाल में ही बड़े पैमाने पर अवैध हथियारों तथा गोला-बारूद की बरामदगी, खतरनाक 'खालिस्तानी आतंकवादी पंजाब की जेल में स्थानांतरण' तथा सांप्रदायिक उन्माद का बढ़ना चिंता का विषय है. तेरह वर्ष आतंकवादी गतिविधियों से प्रभावित रहने की अवधि में पंजाब औसतन प्रति व्यक्ति आय की दृष्टि से देश में दूसरे स्थान पर था, लेकिन भाजपा-अकाली राज में वह चौहदवें स्थान पर पहुंच गया है. भ्रष्टाचार और अनियमितताओं के कारण किसान बड़ी संख्या में आत्महत्या कर रहे हैं. उद्योग-धंधे ठप होते जा रहे हैं. सत्तारूढ़ नेताओं ने 'वसूली' को राजनीतिक व्यापार बना दिया है. ऐसी हालत में पाकिस्तान विदेशों में बैठे खालिस्तानी तत्वों को शह देने की कोशिश कर रहा है. यों पाकिस्तान स्वयं बर्बादी के कगार पर है. नवाज शरीफ प्रधानमंत्री भले ही हों, सत्ता सेना और आई. एस. आई. के हाथों में है. उसे अपनी जनता को भटकाते रहना है और भारत विरोधी हमलों से उसकी धाक बनी रहती है. इसलिए हमेशा पाकिस्तान को दोषी करार देकर हमारी सरकारें अपनी जिम्मेदारी से नहीं बच सकती हैं. अब समय आ गया है, जबकि आतंकवादी, अलगाववादी, माओवादी हिंसक घटनाओं से देश को बचाने के लिए संघीय ढांचे के नियम-कानूनों की समीक्षा कर आवश्यक संशोधन किए जाएं. पंजाब में आतंकवादी हमले में मरने वालों की संख्या कम-ज्यादा होने की चर्चा के बजाए देखा जाना चाहिए कि असम में अलगाववादियों के हमलों अथवा छत्तीसगढ़-झारखंड में माओवादियों के हमलों से कितने लोग मारे जा चुके हैं.

तुलनात्मक अध्ययन किया जाए तो यह संख्या सीमा पार से हुए हमलों में मारे गए लोगों की संख्या से अधिक है. गरीब आदिवासी ग्रामीणों को प्रदेशों की कमजोर पुलिस के भरोसे छोड़े रखना कहां का न्याय है? प्रदेशों के नेता दिल्ली दरबार में जब एक स्वर से 'भारत माता की जय' और 'केन्द्र सरकार से अधिकाधिक पैकेज' की मांग कर सकते हैं, तो उसी भारत माता के मासूम बच्चों की रक्षा के लिए केन्द्रीय बलों के समुचित उपयोग का प्रस्ताव क्यों नहीं पारित कर सकते हैं. ■■

किसी भी प्रदेश की सामान्य पुलिस और उसके थाने ऐसे बड़े हमलों से निपटने के लिए तैयार नहीं रहते. आपदा के समय 'यह मेरा आंगन', 'यह मेरा अधिकार', 'यह मेरी इज्जत' जैसी मानसिकता कहां तक उचित कही जा सकती है?

समय को पहचानने वाले लेखक प्रेमचन्द

प्रेमचन्द भारतीय जनता और परिस्थितियों के एक सच्चे लेखक थे, जिनकी रचनाओं में अपने समय की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक परिस्थितियों की ऐसी गूंज विद्यमान है, जिससे हम अपने समाजशास्त्रीय अध्ययनों की प्रामाणिकता की जांच कर सकते हैं. यह कार्य महान समाजशास्त्री श्यामाचरण दुबे ने किया भी है.

प्रेमचन्द के रचना मानस का बड़ा हिस्सा गोरखपुर में बना और विकसित हुआ था. गोरखपुर के नखास चौक पर उस समय चल रही किताबों की दुकान में थोड़ी सहायता के बदले उन्होंने वहां से विश्व साहित्य की मूल्यवान रचना पढ़ने का अवसर निकाला था- कहा जाता है कि वे दुकान किसी श्रीवास्तव परिवार की थी. बाद में उनकी अंतरंगता महावीर प्रसाद पोद्दार से भी हुई थी जो गोरखपुर के सामाजिक और व्यावसायिक समाज में एक प्रतिष्ठित व्यक्ति थे जिनसे वे महत्वपूर्ण चर्चाएं करते थे. गोरखपुर में नार्मल स्कूल के हेडमास्टरी के दौरान ही उन्होंने महात्मा गांधी के आह्वान पर सरकारी नौकरी छोड़ी थी और अपने को स्वाधीनता संग्राम के मूल्यों के प्रति समर्पित किया था.

मुझे अक्सर लगता है कि प्रेमचन्द तुलसीदास के बाद सबसे ज्यादा लोगों तक पहुंचने वाले भारत के एक बड़े लेखक हैं. तुलसीदास 'राम-काज' के बहाने से भक्ति के माध्यम से पहुंचते हैं और प्रेमचन्द लगभग अनीश्वरवादी होते हुए भी उस जनता के प्रिय लेखक हैं. यह तथ्य भारतीय जनता के भीतर निहित प्रगतिशील मूल्यों में छिपी आकांक्षाओं को पढ़ने और पकड़ने के लिए भी शोध और विश्लेषण का एक बहुत बड़ा विषय हो सकता है.

वे स्वाधीनता संग्राम के चरमोत्कर्ष की अवधि के यथार्थ को पकड़ने वाले लेखक हैं. कई बार यह सवाल भी उठता है कि स्वाधीनता संघर्ष के प्रत्यक्ष उदाहरण उनके यहां नहीं है - हैं, और बहुत गहरे अर्थों में हैं, वे सही अर्थों में मुक्ति के लेखक हैं, उन्होंने उस दौर में स्त्रियों और दलितों के बीच व्यक्तित्व सम्पन्न परिवर्तन कामी पात्रों की कल्पना की जब इन विमर्शों का हल्लाबोल नहीं था. धनिया का तेजस्वी रूप, उन्हीं की कलम से संभव था, जो निरक्षर होते हुए भी घूसखोर दारोगा के परखचे उड़ा देती है, तारने वाली पंचायत को लीलने वाली पंचायत के रूप में देखते हुए उस पर थू-थू का वातावरण बना देती है और होरी की मर्यादा के भीतर, मर्यादा के बदलते हुए मूल्यों की वकालत करती है- मालती की तरह, पंच परमेश्वर, ईदगाह, मंत्र, सभ्यता का रहस्य, सवासेर, गेहूं, कफन जैसी कहानियां समाज और व्यक्ति तथा लोक चेतना में हो रहे सभी तरह के परिवर्तनों और व्यवस्था के निरंतर क्रूर होते जा रहे चरित्र में आम आदमी के पिसने की विवशता की ही कहानियां नहीं हैं, बल्कि इसके भयावह दुश्चक्र के कारण बढ़ रही अमानवीयता की ओर भी इशारा करती हैं.

कफन कहानी में तो प्रेमचन्द इतने मुखर हैं कि वे कहानी के शिथिल हो जाने की चिन्ता किए बगैर जैसे पाठक को बाकायदा समझाते हैं कि घीसू और माधव के निठल्लेपन का कारण, श्रम का लगातार बढ़ता जा रहा शोषण है - वे दोनों सोचते हैं कि रात-दिन खेतों में खटने वाले किसानों की हालत उनसे कोई बेहतर तो नहीं है.

श्रम की संस्कृति का लगातार कमजोर होना, श्रम के महत्व का क्षरण, किस तरह की अमानवीयता की ओर समाज को ले जाता है-प्रेमचन्द इसकी व्याख्या करते हुए प्रतीत होते हैं.

बुधिया की प्रसवपीड़ा के बीच बुझे हुए अलाव में घीसू-माधव के परस्पर संवाद में आलू के लोभ को प्रगट न होने देने वाली जो चालाकी है, वह भी मार्मिक है और यदि हम प्रसव-पीड़ा को पूरी सर्जनात्मक प्रक्रिया की पीड़ा के रूप में देखें और सृजन तथा उसके उत्स के संकट को पहचानें तो एक समूची सभ्यता का विमर्श हमारे सामने स्वतः ही खुलने लगता है. ■■

– प्रो. चित्तरंजन मिश्र
- प्रतिकुलपति
महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

जयंती विशेष

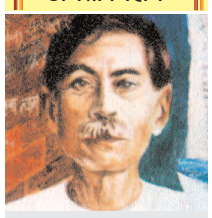

उन्होंने उस दौर में स्त्रियों और दलितों के बीच व्यक्तित्व सम्पन्न परिवर्तन कामी पात्रों की कल्पना की जब इन विमर्शों का हल्लाबोल नहीं था.

अंततः याकूब अपनी नियति को प्राप्त हुआ

अवधेश कुमार
जाने-माने पत्रकार

जब उच्चतम न्यायालय ने एक बार डेथ वारंट को कानूनी रूप से सही करार दिया तो फिर याकूब रज्जाक मेमन की फांसी में महाराष्ट्र सरकार के सामने कोई समस्या नहीं थी. लेकिन ये भारत देश है, यहां ऐसे नामचीन लोग हैं, वकील हैं जो इतनी आसानी से याकूब जैसे व्यक्ति को फांसी पर चढ़ने नहीं देने वाले थे. पूरा देश विस्मय से देख रहा था कि आखिर राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी द्वारा दूसरी दया याचिका खारिज किए जाने के बाद वकीलों की पूरी फौज मीडिया को लेकर किस तरह मुख्य न्यायाधीश केएचएल दत्तू के दरवाजे आधी रात पहुंच गई. 5 घंटे 45 मिनट की सुनवाई के बाद न्यायालय ने कहा कि न तो क्यूरेटिव पिटीशन पर दोबारा सुनवाई की जरूरत है और न ही मौत का वारंट जारी करने में कोई गलती हुई है. न्यायालय ने साफ कहा कि याकूब के मामले में सभी कानूनी प्रक्रिया सही तरीके से अपनाई गई. यही नहीं तीन न्यायाधीशों वाली पीठ के अध्यक्ष दीपक मिश्रा ने आदेश में कहा कि मौत के वारंट पर रोक लगाना न्याय का मजाक होगा. इससे कड़ी टिप्पणी और क्या हो सकती है? जरा सोचिए, उच्चतम न्यायालय की तीन सदस्यीय बड़ी पीठ जिसे न्याय का मजाक करार दे रही थी उसे ये नामचीन वकील न्यायिक मान रहे थे. तो फिर इनके लिए क्या शब्द प्रयोग किया जाए?

यह बड़ी अजीब स्थिति है. आखिर एक व्यक्ति जो भारत पर पहले श्रृंखलाबद्ध बम धमाकों का अभियुक्त था, जिसका अपराध प्रमाणित हो चुका था...उसके बाद उसके पक्ष में खड़ा होने वालों को क्या कहा जा सकता है? वास्तव में यह तो मुंबई हमला मामले की त्रासदी है कि इसके दो मुख्य अभियुक्त दाऊद इब्राहिम और याकूब के बड़े भाई टाइगर मेमन को आज तक पकड़ा नहीं जा सका.

यह न्यायिक प्रक्रिया तभी पूरी होगी जब इन दोनों को भी पकड़कर कानून के कठघरे में खड़ा किया जाए. निश्चित मानिए, अगर कभी ऐसा हुआ तो इन वकीलों का तथा बुद्धिजीवियों का समूह उसके पक्ष में भी खड़ा हो जाएगा. ये वकील इतने महंगे हैं कि इन्हें कोई आम आदमी अपने मुकदमे की पैरवी के लिए लेने की कल्पना भी नहीं कर सकता. इसके पूर्व किसी पीड़ित के लिए इनको एक साथ इस तरह खड़े होते नहीं देखा गया. इनका निहित एजेंडा क्या था? इन प्रश्नों का उत्तर देश को मिलना चाहिए. खैर, जो भी हो कम से कम इसके बाद कोई मानसिक संतुलन वाला यह नहीं कह सकता कि याकूब के साथ न्यायिक प्रक्रिया में कहीं कोई कमी रह गई. ■■

वास्तव में यह तो मुंबई हमला मामले की त्रासदी है कि इसके दो मुख्य अभियुक्त दाऊद इब्राहिम और याकूब के बड़े भाई टाइगर मेमन को आज तक पकड़ा नहीं जा सका.

नजर के पार

खत्म हो रही गुरु-शिष्य की परंपरा

प्रा. सुभद्रा सिन्हा
लेखिका

प्राचीन काल से ही गुरु-शिष्य की एक अटूट परंपरा रही है. गुरु जो हमें अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाए, जीवन जीने की नई राह दिखाए, गुरु को साक्षात परमब्रह्म स्वरूप माना गया है. प्राचीन समय में शिष्य गुरुकुल में रहकर विद्योपार्जन करते थे. गुरु पूर्ण समर्पण भाव से शिक्षा के साथ-साथ सारे संस्कारगत आचार-व्यवहार शिष्य में डालने का भरसक प्रयत्न करते थे. धीरे-धीरे समय बदला. हम 21वीं सदी में जा पहुंचे और समय के बदलाव ने अपनी चपेट में सब कुछ ले लिया. फिर गुरु - शिष्य की एक स्वच्छ, निःस्वार्थ भावना भी उससे कैसे अछूती रह पाती. पहले गुरु शिष्य को निःशुल्क शिक्षा प्रदान करते थे. शिष्य श्रद्धाभाव से इसी दिन गुरु की पूजा-अर्चना कर अपनी-अपनी सामर्थ्य व शक्ति के अनुसार गुरु को दान-दक्षिणा देकर कृतार्थ होते थे. लेकिन पहले जैसी गुरु -शिष्य की परंपरा का अब अवसान होते जा रहा है. वर्तमान में गुरु-शिष्य की परंपरा के स्थान पर शिक्षक और विद्यार्थी की परंपरा है. आज शिक्षक और विद्यार्थी का रिश्ता लेन-देन के रिश्ता में तब्दील हो गया है. पहले गुरु तात्विक ज्ञान देते थे जिससे मनुष्य अपने मनोविकारों पर विजय प्राप्त करता था.

वर्तमान में शिक्षक औरों से आगे बढ़ने की शिक्षा देते हैं. इस तरह अनायास ही मनुष्य में अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष की भावना का समावेश हो जाता है. प्राचीन समय के गुरु द्रोणाचार्य का यह कृत इतिहास में अमर हो गया कि बहुत पहले एक शिक्षक हुआ था जिसने अपने शिष्य का दाहिना अंगूठा दक्षिणा में मांग लिया था. यहां गुरु द्रोणाचार्य ने समतावाद के स्थान पर भेदभाव को प्रश्रय दिया. एकलव्य का दाहिना अंगूठा इसलिए मांग लिया कि कोई अर्जुन जैसा दूसरा धनुर्धर इस ब्रह्मांड में न हो सके. इसी तरह परशुराम ने अपने शिष्य कर्ण को श्राप दे दिया कि अंतिम समय में तुम अपनी शिक्षा भूल जाओगे क्योंकि उसने अपना वंश छिपाया था. इस तरह कर्ण जैसे होनहार विद्यार्थी को जाति एवं वंश के आधार पर अपमानित किया गया. प्राचीन समय का ऐसा एक-दो उदाहरण अपवाद स्वरूप ही मिलता है. लेकिन आज परिस्थितियां अलग हैं.

समकालीन जीवन के अधिकतर शिक्षक अपने स्वार्थ सिद्धि में प्रयत्नशील होते हैं. आज भी कर्ण और एकलव्य जैसे होनहार विद्यार्थी को इसलिए एक योग्य शिक्षक नहीं मिल पाता क्योंकि वह आज के आधुनिक शिक्षक के मापदंडों पर खरा नहीं उतरता. शिक्षकों का विद्यार्थी-विद्यार्थी में भेदभाव करना यह हमारे समाज की बहुत बड़ी विडंबना है. इससे एक स्वस्थ समाज की स्थापना नहीं हो सकती क्योंकि शिक्षक ही हमारे समाज सृष्टा हैं. एक आदर्श समाज की नींव शिक्षक के हाथों होती है. जिस तरह शिक्षक अपने दायित्वों को भूलते जा रहे हैं, उसी तरह विद्यार्थी के मन में भी उनके प्रति सम्मान कम होते जा रहा है. इसलिए शिक्षकों को अपने दायित्वों का भान होना चाहिए. क्योंकि एक आदर्श शिक्षक वही है जो अपने शिष्यों को सभी तरह के कलुषों से मुक्त चित्त की खोज में उसका सहयात्री बने. यह दिन हम प्राचीन काल से मनाते आ रहे हैं और मनाते रहेंगे लेकिन ध्यान रहे यह सिर्फ रस्म अदायगी भर नहीं होनी चाहिए. गुरु और शिष्य की स्वच्छ, निर्मल और पवित्र भावना बनी रहनी चाहिए तभी इस दिन को हर्षोल्लास पूर्वक मनाने की सार्थकता है. ■■

तोल बोल

एक वैज्ञानिक और राजनेता कलाम का उदय बहुत ही मामूली पृष्ठभूमि से भारत के राष्ट्रपति के रूप में हुआ. दुनिया भर में उनके प्रशंसक हैं.

■ **बराक ओबामा**, राष्ट्रपति, अमेरिका.

कुछ व्यक्तित्व इतने विराट होते हैं कि उनके प्रति सम्मान व्यक्त करने के लिए शब्द कम पड़ जाते हैं. डॉ. कलाम ऐसी ही विभूति थे.

■ **शिवराज सिंह चौहान**, मुख्यमंत्री, म.प्र.

gñWmHñ gmXHñ :
ñd. Odñabmb XSñ
M`a Z, E{SQñ{a`b ~ñS :
{dO~ XSñ
E{SQa-BZ-Mr\ñ :
amOB XSñ
gmXH :
{dHñg {_I ★
★ nr. Aña. ~r. HbZZ Hñ AZgia gnU gmXHñ` Xñ{`Ed Hñ {bE {Oâ_Xia.

© लोकमत समाचार _ àHñ{eV g^r gr_Jr Hñ gdñ{YHñia bmHñ_V _r{S`ñ àn`dO {b. Hñ mrg ga{jV h.
bmHñ_V _r{S`ñ àn`dO {b. Hñ {bE _ÐHñ Ed àHñeHñ बालाजी मुले Ûiar bmHñ_V _r{S`ñ àn. {b., ñbmQ Hñ. 192, 207, 208 E _. Aña. Sr. gr. BñS{fñO`b E{a`ñ, ~Or~rar, ZrJna _{ÐV Ed bmHñ_V ^dZ n. Odñabmb Zñëñ _ñJ, ZrJna _ àHñ{eV.
P.O.BOX NO. 230 R.N.I. No. 47101/89
XaUd{Z : 0712-2423527 (7 bmBñ'g) \\Sg : 6618555
Email : gmXHñ` : lsedit.ngp@lokmat.com
{dkmZ : advt.ngp@lokmat.com {dVaU : circ.ngp@lokmat.com

इतिहास पर नजर 31 जुलाई

दक्षिण भारत में भारतीय जनता पार्टी की पहली सरकार बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले दिग्गज बी.एस. येदियुरप्पा को भ्रष्टाचार के आरोपों के चलते 31 जुलाई 2011 को कर्नाटक के मुख्यमंत्री पद से त्यागपत्र देना पड़ा था. 27 फरवरी 1943 को एक साधारण परिवार में जन्मे येदियुरप्पा कर्नाटक के उन राजनेताओं में हैं, जिनका खुद का व्यापक जनाधार है. खान माफिया से कथित साठगांठ व पद के कथित दुरुपयोग के चलते पदत्याग के बाद उन्होंने भाजपा से नाता तोड़ लिया और 2012 में कर्नाटक जनता दल बनाया. 2013 में हुए राज्य विधानसभा के चुनाव में उनकी पार्टी को हालांकि सत्ता तो नहीं मिली लेकिन उसने कर्नाटक में भाजपा को लगातार दूसरी बार सत्ता में आने से रोक दिया. 2 जनवरी 2014 को येदियुरप्पा की भाजपा में वापसी हो गई. ■■

- 1498- कोलंबस ने त्रिनिदाद को खोजा
- 1865- विश्व में नैरोगेज लाइन पर पहला रेल यातायात आस्ट्रेलिया में शुरू
- 1988- मलेशिया में पुल ढहा, 32 की मौत 1674 घायल
- 1999- भारत-पाक शांति वार्ता टूटी
- 2007- क्यूबा के बीमार राष्ट्रपति फिदेल कास्त्रो ने अपने भाई राऊल को पद सौंपा.
- 2012- अमेरिकी तैराक माइकल फेल्प्स ने सबसे ज्यादा ओलंपिक पदक जीतने का रिकार्ड बनाया.

पाठकों के पत्र

पाकिस्तान की नापाक हरकतें

पंजाब में पाकिस्तान ने आतंकी हमला करवाकर यह साबित कर दिया है कि वह भारत के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध नहीं चाहता. भारत से कश्मीर हथियाने के लिए उसने बार-बार हमला किया परंतु हर बार मुंह की खाई. जब उसे लगा कि वह सैनिक ताकत से भारत को हरा नहीं सकता, तब उसने आतंकवादियों को प्रशिक्षित कर भारत में खून-खराबा शुरू करवा दिया. हम उसकी बेहतरी के लिए अच्छे संबंध चाहते हैं, उससे बड़े भाई की तरह पेश आते हैं परंतु वह सबक सीखने को ही तैयार नहीं है.

■ **अर्चन कनिकवले**, हैदराबाद

आतंकवाद के खिलाफ एकजुटता

आतंकवाद की समस्या से भारत ही नहीं पूरा विश्व झुलस रहा है. फर्क इतना है कि जहां ज्यादातर मुल्कों में आतंकवाद को लेकर राजनीति नहीं की जाती, वहीं हमारे देश में इसे वोट बैंक को मजबूत बनाने का हथियार बनाया जाता है. आतंक की चाहे कोई भी वारदात हो, किसी आतंकी को चाहे सजा देनी हो, राजनीतिक दल आरोप-प्रत्यारोप में उलझ जाते हैं, यह बेहद दुर्भाग्यपूर्ण है.

■ **अश्लेष कुमार**, कटनी

आप भी अपने पत्र हमें lsedit.ngp@lokmat.com पर मेल कर सकते हैं या डाक पते पर भेज सकते हैं.

हाजिर जवाबी

मुल्ला नसरुद्दीन ने एक आदमी से कुछ उधार लिया था. मुल्ला समय पर उधार चुका नहीं पाया और उस आदमी ने इसकी शिकायत बादशाह से कर दी. बादशाह ने मुल्ला को दरबार में बुलाया. मुल्ला बेफिक्री के साथ दरबार पहुंचा. जैसे ही मुल्ला दरबार पहुंचा वह आदमी बोला- बादशाह सलामत, मुल्ला ने बहुत महीने पहले मुझसे 500 दीनार बतौर कर्ज लिए थे और अब तक नहीं लौटाए. मेरी आपसे दरख्वास्त है कि बिना किसी देरी के मुझे उधार वापस दिलाया जाए. मुल्ला ने यह सुनने के बाद कहा- हुजूर, मैंने इनसे पैसे लिए थे मैं यह बात मानता हूं और मैं उधार चुकाने का इरादा भी रखता हूं. अगर जरूरत पड़ी तो मैं अपनी गाय और घोड़ा दोनों बेचकर भी इनका उधार चुकाऊंगा. तभी वह व्यक्ति बोला - यह झूठ कहता है हुजूर, इसके पास न तो गाय है और न ही घोड़ा है. अरे इसके पास न तो खाने को है और न ही एक फूटी कौड़ी है.

हास्य

यह सुनते ही मुल्ला नसीरुद्दीन बोला - जहांपनाह, जब यह जानता है कि मेरी हालत इतनी खराब है तो मैं ऐसे में जल्दी इसका उधार कैसे चुका सकता हूं. जब मेरे पास खाने को ही नहीं है तो मैं उधार दूंगा कहां से.

जज ने यह सुना तो मामला रफा-दफा कर दिया. नसीरुद्दीन अपनी हाजिर जवाबी से बच निकला. ■■